SOCIAL PSYCHOLOGY

B.A. (Hons) Part-III
Paper-V
By- Dr. Ramendra Kumar Singh
H.O.D
Dept of Psy.
D.K. College, Dumraon (Buxar)
VKSU, Ara

मनोवृत्ति की परिभाषा दें। मनोवृत्ति किस प्रकार विश्वास एवं मत (opinion) से भिन्न है। (Define attitude. How does attitude relate and differ from belief and opinion? Discuss.)

मनोवृत्ति शब्द का प्रयोग प्रायः हम अपने दैनिक जीवन में करते हैं। इस लिहाज से यह एक सामान्य पद या शब्द है, परन्तु, मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह एक जटिल एवं विवादास्पद सम्प्रत्यय है। इसीलिए इसकी परिभाषा को लेकर मनोवैज्ञानिकों में गहरा मतभेद है। यहाँ हम Secord & Backman (1964) द्वारा दी गई परिभाषा को उल्लेखित करना चाहेंगे, जो काफी हद तक स्पष्ट एवं सन्तोषजनक है :-

"The term attitude refers to certain regularities of an individual's feelings, thoughts and predispositions to act towards some aspects of his environment."

अर्थात मनोवृत्ति से तात्पर्य व्यक्ति के भावों, विचारों और प्रवृत्तियों से है, जो व्यक्ति को वातावरण के कुछ पहलुओं के प्रति प्रतिक्रिया करने को प्रवृत्त कराती है। इस परिभाषा का विश्लेषण करने पर मनोवृत्ति के तीन पक्ष सामने आते हैं :-

(क) भावात्मक पक्ष (ख) संज्ञानात्मक पक्ष (ग) व्यवहारिक पक्ष

केच एवं क्रचफिल्ड, मायर्स (1988) आदि ने भी इन्हीं तीनों पक्षों के संगठन को मनोवृत्ति कहा है, अब इन तीनों पक्षों पर संक्षिप्त चर्चा करना उचित लगता है, ताकि Attitude का स्वरूप स्पष्ट हो जाए-

(क) भावात्मक पक्ष का सम्बन्ध किसी वस्तु, परिस्थिति, व्यक्ति या घटना के प्रति होनेवाले अनुकूल (सुखद) या प्रतिकूल (दुःखद) भाव से है, इसे हम Positive attitude तथा Negative attitude भी कहते हैं।

(ख) मनोवृत्ति के संज्ञानात्मक पक्ष का सम्बन्ध किसी घटना

वस्तु या परिस्थिति के बारे में विचार से है। संज्ञानात्मक पक्ष में विचार या विश्वास किसी के प्रति होता है। व्यक्ति का विश्वास किसी वस्तु या व्यक्ति में कम या अधिक हो सकता है।

(ग) स्नायविक पक्ष का तात्पर्य मनोवृत्ति के उस पक्ष से है जो व्यक्ति को क्रिया करने के लिए प्रेरित करता है। अर्थात उसका सम्बन्ध व्यक्ति के व्यवहार से है। मनोवृत्ति के संदर्भ में इसे उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है। जैसे - एक दोस्त अपने दोस्त से गले लगाता है जो सुखद अनुभूति है और दुश्मन से बच निकलता है। यहाँ दोस्त से गले लगना मनोवृत्ति के अनुकूल भाव Positive attitude है। दुश्मन से नफरत करना बच निकलना Negative attitude प्रतिकूल भाव है। इसमें अनुकूल एवं प्रतिकूल विचार या विश्वास संज्ञानात्मक पक्ष है क्योंकि इसमें दोस्त एवं दुश्मन के प्रति विचार या विश्वास अन्तर्निहित है। फिर इसी उदाहरण में दोस्त का गले लगना, दुश्मन से बचकर निकलना मनोवृत्ति के स्नायविक क्रियात्मक व्यवहार दर्शा रहा है। इस तरह मनोवृत्ति में तीनों पक्ष पाये जाते हैं।

~~मनोवृत्ति एवं विश्वास में सम्बन्ध~~ :-

मनोवृत्ति की सामान्य विशेषताएँ :- मनोवृत्ति में कुछ ऐसी सामान्य विशेषताएँ पाई जाती हैं, जो उसके स्वरूप पर प्रकाश डालने में काफी सहायक हैं। ऐसी विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :-

1) मनोवृत्ति अर्जित होती है। व्यक्ति शिक्षण एवं अनुभव के आधार पर मनोवृत्तियों को सीख लेता है।

2) मनोवृत्ति अपेक्षाकृत स्थाई होती है। हलाँकि कुछ मनोवृत्तियाँ अस्थाई भी होती हैं, तथापि अधिकांश हालात में ये स्थाई होती है।

3) मनोवृत्ति की एक दिशा होती है, जो साकारात्मक या नकारात्मक कुछ भी हो सकती है।

4) मनोवृत्ति में शक्ति होती है अर्थात इसमें तीव्रता पाई जाती है।

5) मनोवृत्ति में प्रेरणात्मक गुण (Motivational attribute) भी पाये जाते हैं।

मनोवृत्ति तथा विश्वास में सम्बन्ध :-

मनोवृत्ति तथा विश्वास दोनों ही सम्प्रत्ययों में गहरा सम्बन्ध है। वर्शेल एवं कूपर (1979) ने दोनों के बीच के सम्बन्धों को रेखांकित

"वस्तुओं या विचारों के बीच सम्बन्धों की अभिव्यक्ति को विश्वास कहते हैं।"

उपर्युक्त परिभाषा इस बात की ओर इशारा कर रही है कि दोनों के बीच कुछ सम्बन्ध एवं समानताएँ पाई जाती हैं जिनका वर्णन क्रमशः किया जा रहा है।

समानताएँ :- विश्वास एवं मनोवृत्ति में निम्नलिखित समानताएँ हैं :-

(1.) मनोवृत्ति की तरह विश्वास में भी कई पक्ष सम्मिलित होता है।

(2.) मनोवृत्ति एवं विश्वास दोनों ही सामान्यतः स्थाई स्वरूप की होती है।

(3.) मनोवृत्ति की तरह विश्वास में भी संज्ञानात्मक पक्ष पाया जाता है।

(4.) मनोवृत्ति एवं विश्वास दोनों में व्यवहारात्मक संघटक (Behavioural Component) पाया जाता है।

अन्तर :- इन समानताओं के बावजूद दोनों अलग-अलग सम्प्रत्यय हैं। दोनों में कुछ अन्तर है, जो निम्नलिखित है :-

(1.) दोनों में पहला अन्तर यह है कि Attitude में संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं व्यवहारात्मक तीनों पक्षों की प्रधानता होती है जबकि Belief में संज्ञानात्मक पक्ष की प्रधानता होती है। जैसे धर्म एवं धार्मिक क्रियाओं में विश्वास करना संज्ञानात्मक पक्ष है।

(2.) इन दोनों में अन्तर स्पष्ट करते हुए क्रेच एवं क्रचफिल्ड ने कहा है :- All attitudes incorporate relevant beliefs about the objects of the attitude but we can not say conversely that all beliefs are part of attitude structure."

(3.) दोनों में तुलनात्मक अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि मनोवृत्ति कई परिस्थितियों में बदल भी सकती है, लेकिन विश्वास अपेक्षाकृत स्थाई होता है।

(4) मनोवृत्ति में विश्वास अन्तर्निहित होती है, लेकिन विश्वास में मनोवृत्ति नहीं भी अन्तर्निहित हो सकती है।

(5) दोनों में तुलनात्मक अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि attitude वास्तविकता के निकट होती है, परन्तु विश्वास में वास्तविकता से निकट का सम्बन्ध हो भी सकता है, दूर का भी सम्बन्ध हो सकता है।

(6) दोनों में तुलनात्मक अध्ययन करने पर हम यह भी पाते हैं कि मनोवृत्ति की तुलना में विश्वास में अंधविश्वास अधिक पाई जाती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि मनोवृत्ति तथा विश्वास दोनों दो महत्वपूर्ण सम्प्रत्यय है जिसमें गहरा सम्बन्ध है। कई दृष्टिकोण से दोनों में समानताएँ पाई जाती हैं, इसके बावजूद भी दोनों में अन्तर है जिसका वर्णन ऊपर किया गया है।

मनोवृत्ति और मत में सम्बन्ध

बहुधा लोग मनोवृत्ति एवं मत को एक दूसरे की पर्यायवाची समझने की भूल करते हैं; लेकिन दोनों में काफी अन्तर है। Secord & Backman ने 'मत' को परिभाषित करते हुए कहा है:-

"An openion is a belief that holds about some objects in the environment."

~~मत एवं~~ मनोवृत्ति में मत की भूमिका होती है, फिर भी दोनों में निम्न अंतर है:-

(1) मत में केवल संज्ञानात्मक पक्ष होते हैं जबकि मनोवृत्ति में संज्ञानात्मक पक्ष के अलावे भावात्मक एवं क्रियात्मक पक्ष भी पाई जाती है। मत में भाव या संवेग नहीं होता है।

(2) व्यक्ति के व्यवहार में मत की अपेक्षा मनोवृत्ति का अधिक प्रभाव पड़ता है।

(3) दोनों में तीसरा अंतर यह है कि मत का निर्माण चेतन स्तर पर होता है, जबकि मनोवृत्ति का निर्माण चेतन-अचेतन दोनों ही स्तर पर होता है। जैसे जनसंख्या नियंत्रण पर मत पक्ष तथा विपक्ष में मत चेतन स्तर पर होता है, लेकिन आतंकवाद के खिलाफ प्रतिकूल मनोवृत्ति आपसी वाद-प्रतिवाद द्वारा अचेतन से बन जाती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि मनोवृत्ति एक अर्जित प्रवृत्ति है जिसे व्यक्ति समाज से ग्रहण करता है। इसकी कुछ विशेषताएँ हैं जिनका वर्णन ऊपर किया गया है।

10.09.2024